E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(2): 08-09
Received: 06-05-2019
Accepted: 10-06-2019

डॉ अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

भारत की परमाणु नीति

डॉ अवधेश कुमार

सन् 1998 तक भारत की अस्पष्ट नीति थी। किसी भी देश की नीति को ठीक से नहीं बताया जा सकता है। सारे कागजात सरकारी है। कोई सूचना अनुमान के हिसाब से बोलता है। रक्षा मंत्री का वक्तव्य, परेड में हथियार दिखाना ही हथियार क्षमता है। शक्ति संतुलन की जब भी बात होती है तो व्यक्ति विषम होने पर ही शक्ति संतुलन का ठीक मानता है। अनुमान एवं सरकारी कागजातों पर नीति आती है। 1998 के पहले Non-Violing Defence अपनायी जा रही थी। आदर्शवादी एवं यथार्थवादी विचारधारा पायी जाती हैं यही कारण था कि भारत ने अहिंसात्मक प्रतिरक्षा की बात कही है। हम नीति से ही प्रतिरक्षाकारी है।
हम विश्व शान्ति, परमाणु निरस्त्रीकरण, समयबद्ध निरस्त्रीकरण की बात करते हैं। नेहरू ने माना कि परमाणु के ढेर की छाया में शान्ति नहीं मिलेगी। यद्यपि नेहरू ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन दिया। परन्तु 14 अगस्त, 1941 को संविधान सभा में भाषण दिया कि मानवता एवं परमाणु बम में अन्तर है मानवता की भावना भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अपनी प्रतिरक्षा के प्रति भारत की नीति शांन्तिपूर्ण रही है नेहरू ने परमाणु तकनीकी प्राप्त करने की बात की। यह सिर्फ हमारे विकास उद्देश्यों को पूरा करेगें। 10 मई, 1954 को लोकसभा में नेहरू जी ने कहा कि ‘‘हम बहुत समझकर विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग मानवता के लिए करेगे, भारत के लिए शान्तिपूर्ण संसाधनों के लिए कार्य करेगे क्योंकि संसाधन भी सीमित है।’’
20 वर्ष बाद पहला परमाणु विस्फोट होता है। भारत में उस नीति का निर्माण किया कि परमाणु सामग्री को परिष्कृत की क्षमता प्राप्त कर चुके थे। हमनें हमेशा डटकर परमाणु हथियार का विरोध किया है।

परमाणु नीति

1. हम परमाणु सैन्यीकरण का विरोध करते हैं एवं हम जनसंहार के लिए परमाणु उत्पाद का निर्माण नहीं करेगें।
2. दुनिया से कहा कि अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय पूर्ण निःशस्त्रीकरण के लिए कार्य करें एवं पक्षपात नहीं होना चाहिए प्रत्येक देश परमाणु निरस्त्रीकरण एवं पूर्ण निःरस्त्रीकरण हो।
3. हम परमाणु एवं उच्च तकनीकी अपनायेंगे ताकि हम इनका इस्तेमाल शान्तिपूर्ण उपयोग के लिए करेंगे एवं स्वायत हो सके।
4. भारत इस बात का इच्छुक है कि भारत निरीक्षण, नियंत्रण के लिए सहमत है यदि यह सारे राष्ट्रों पर समान रूप से लागू किया जाय।

अमरीका ने भारत को परमाणु शक्ति बनने का सुझाव दिया था। एवं हम एन.पी.टी. से भी मुक्त बन गये था। अमरीका मुख्यतः चीन एवं रसिया को घेर रहा था। नेहरू ने इसको मानने से इंकार किया। नेहरू एक प्रतिबद्ध आदर्शवादी थे। नेहरू शक्ति के समीकरणों से भारत को अलग रखना चाहते थे। शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के माध्यम से भाईचारा बढ़ाया जाय यही भारत का उद्देश्य था। श्रीमती गांधी ने नेहरू के ठीक उल्टा किया। यद्यपि द्विभाषी तरीके से परमाणु की तैयारी के लिए वैज्ञानिकों से कहा। श्रीमती गांधी ने महसूस किया कि पड़ोसी देशों का राजनीतिक समीकरण बदल रहा था तो परमाणु विस्फोट 1974 में आवश्यक था। कुछ आलोचक मानते हैं कि विपक्षी को जवाब देने के लिए परमाणु विस्फोट किया–

1. यह एक प्रयोग होगा जिसके द्वारा आगे चलकर हम परमाणु हथियार कार्यक्रम को चालू कर सकते हैं।
2. हम प्रयोग के द्वारा अपनी क्षमता का प्रदर्शन करेंगे एवं शान्तिपूर्ण उद्देश्य के लिए काम करेगा।

श्रीमती गांधी ने अपने सिद्धान्तों में दृढ़ता दिखाया। वह परमाुण के प्रति कटिबद्ध थी, लेकिन 24 वर्षों

तक हमनें कोई जल्द परमाणु परीक्षण नहीं किया एवं परमाणु ब्रह्मचर्य का प्रयास किया। श्रीमती गांधी ने मान्यताओं की शक्ति नहीं लगायी। परमाणु विस्फोट को नकारने का प्रयास किया। बाहरी देशों ने इसका काफी विरोध किया। पाक राष्ट्रपति ने घास खाकर परमाणु बम बनाने की बात कहीं। 1990–1997 तक के दशक में भारत पर दबाव पड़ रहा था कि भारत निरस्त्रीकरण करें। पी–5 ने भी काफी दबाव डाला। सी.टी.बी.टी., एन.पी.टी. ने भी काफी दबाव डाला। भारत ने हमेशा प्रतिबद्धता दिखायी।

11 मई को तीन थर्मो न्यूक्लियर का टेस्ट किया 13 मई को दो (2) विस्फोट हुआ। बुद्ध पूर्णिमा को ही प्रयोग किया जाता है। "Buddha Laughed and White House collased" अमरीका ने भारत एवं पाक पर प्रतिबंध लगा दिया। ''ऑपरेशन शक्ति'' के तहत भारत ने परमाणु परीक्षण किया। जोशी ने 'जय विज्ञान' का नारा भी जोड़ दिया था। भारत ने सिर्फ 5 विस्फोट से शक्ति प्राप्त कर ली थी। भारत की स्पष्ट नीति के कारण–

1. 1980 के दशक से ही सुरक्षा वातावरण दिन–प्रतिदिन गिरता चला जा रहा था।
2. जिस प्रकार से पक्षपात पूर्ण एवं नियंत्रणकारी अंतर्राष्ट्रीय विधि के माध्यम से भारत पर शिंकजा कसा जा रहा था अतः भारत के पास कोई उपाय नहीं था।
3. सिर्फ 5 ही राष्ट्र परमाणु सम्पन्न रहेगे तो वे 'डॉमिनेट' करेंगे।
4. भारत की क्षेत्रीय अखण्डता पर कई बार आक्रमण हो चुका है। अतः सम्प्रभूता को संरक्षित करने के लिए परमाणु सेना पर कम खर्च आता है। जबकि परम्परागत सेना पर ज्यादा खर्च होता है। आप शत्रु पर गहरा मनोवैज्ञानिक दबाव भी बना लेते हैं।
5. जिन राज्यों के ऊपर परमाणु नियंत्रण का शिकंजा डाला जा सकता था। फ्रांस एवं चीन ने दबाव में परमाणु कार्यक्रम बनाये। भारत में विस्फोट करना ही जरूरी था।

आलोचकों ने माना कि भारत ने आदर्शवाद से समझौता कर लिया। चिनाय ने कहा कि भारत पानी, शिक्षा आदि को महत्वपूर्ण मान सकता था। उन्होंने परमाणु परीक्षणों की आलोचना की।

लियोन रोज ने कहा कि भारत एवं पाक ने परमाणु परीक्षण अपनी क्षेत्रीय दबाव में आकर भा0ज0पा0 ने अपने एजेण्डे ने परमाणु परीक्षण रखा था। पाक ने कोरिया एवं चीन की मदद से परमाणु परीक्षण किया। भारत ने 1971 पर से ही भूट्टों की चेतावनी की इस्लामी बम बनायेंगे से ही काफी दबाव था। भारत 1971 से ही सामरिक खतरा एवं असुरक्षा महसूस कर रहा था। पाक ने भारत के लिए 'ब्लीडिंग टिल डेथ' की नीति अपनायी। भारत से परम्परागत चीजों से पाक नहीं जीत पायेगा यह पाक जानता था। रूस 715, फ्रांस 210, ब्रिटेन 380 एवं चीन को 450 अमरीका ने 1032 विस्फोट किये जिसे भारत ने सिर्फ 5 प्रयोगों में परमाणु क्षमता प्राप्त कर लिया था। यह भारत की उद्भूत क्षमता का परिचायक है। पाकिस्तानी परमाणु कार्यक्रम के जनक अब्दुल कादिर खान ने अन्य राष्ट्रों को परमाणु की जानकारी दी जबकि भारत का परमाणु पूर्ण रूप से सुरक्षित है।

संदर्भ

1. एम0 अनिता एवं मोहम्मद औरंगजेब, पाकिस्तानः इनसाइक्लोपीडिया ऑफ संस्कृतिविलिटी'', 2012
2. डॉ0 महेन्द्र कुमार–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति।
3. एम.सी. पीले एवं बी0एल0 फिनलेसन एवं मैकमोहन, टी0एस0 ''अपडेटेड वर्ल्ड मैन ऑफ द कोपेन गीगर क्लाइमेट क्लासिफिकेशन, 2007
4. डा0 दीनानाथ वर्मा–अन्तर्राष्ट्रीय संबंध।
5. अफगानिस्तान, द वर्ल्ड फैक्ट बुक, सेन्ट्रल इनटेलीजेंस एजेन्सी, 2007